ISSN - 2229-3620
NSI
शोध संचार बुलेटिन
October-December, 2023
Vol. 13, Issue 52
Page Nos. 109-111
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

बस्तर- संस्कृति एवं परम्पराएँ : एक अध्ययन

डॉ. अजय पाल सिंह*

शोध सारांश

संस्कृति मानवीय क्रियाकलापों का लेखा–जोखा है। सामान्यतः संस्कृति तभी तक जीवित रहती है, जब तक वह लोक व्यवहार में प्रदर्शित होती है। डॉ. रामकुमार वर्मा लिखते हैं कि ''परम्परा से अनुप्राणित संस्कृति मानव के सामूहिक अस्तित्व को अविभाज्य अंग होती है।'' बस्तर का जनजीवन जनजातीय संस्कृति का ही स्वरूप आलोकित करता है। पेज और भात से अपने भोजन की शुरूआत करने वाला बस्तर सरल, सहज मस्ती भरी जिन्दगी जीना चाहता है। लगभग सभी लोग मांसाहार व मद्यपान के शौकीन होते हैं। गीत और नृत्य का आनंद लेते हैं। स्थानीय देवी–देवताओं के प्रति घोर आस्था होती है। मां दंतेश्वरी, मावली माता, भैरम देव, पाटदेव, अंगादेव इत्यादि की पूजा भक्ति देखने लायक होती है। जादू, भूत–प्रेत, झाड़–फूँक, सिरहा–गुनिया जनजीवन के अभिन्न हिस्से होते हैं। तीज–त्यौहार, लोकनाट्य, लोकनृत्य, शिल्पकला व गोदना में अद्भुत सौंदर्य झलकता है। घोटुल जैसी युवा गृह संस्कृति व भव्य रथ यात्रा ने तो समूचे विश्व का आकर्षण बना दिया है– बस्तर को।

Keywords : संस्कृति, परम्परा, लोकनाट्य, लोकनृत्य, तीज–त्यौहार, बस्तर।

हिन्दुस्तान के हृदय स्थल छत्तीसगढ़ के दक्षिण में बस्तर अवस्थित है। यह पुरानी रियासतों में से एक था। जनजातीय बाहुल्य व जंगलों से आच्छादित[1] यह स्थल सीपी एण्ड बरार में आने वाले देशी रियासतों में सबसे बड़ा था। भारत के देशी रियासतों में क्षेत्रफल की दृष्टि से बस्तर चतुर्थ स्थान पर आता था– हैदराबाद (95337 वर्ग मील), ग्वालियर (33119 वर्ग मील), मैसूर (30886 वर्ग मील) और फिर बस्तर (13062 वर्ग मील)।[2]

बस्तर का इतिहास पाषाण युग से मिलता है। बस्तर का प्राचीन नाम चक्रकूट या भ्रमरकूट था।[3] बस्तर नामकरण के संबंध में भिन्न–भिन्न मत देखने–सुनने को मिलते हैं। किवदंती की बात करें तो एक बड़ी आबादी यह मानती है कि चालुक्यों की कुल देवी दंतेश्वरी प्रसन्न होकर राजा अन्नमदेव के साथ वारंगल से उत्तर दिशा की ओर चलीं और एक नए राज्य की स्थापना हेतु एक विस्तृत क्षेत्र पर अपना वस्त्र फैला दिया। इसी कारण यह वस्त्रजन्य क्षेत्र वस्त्र के अपभ्रंश के आधार पर 'बस्तर' कहलाने लगा। पॉलिटिकल ऐजेन्ट डिब्रे कहते हैं कि स्थानीय लोग ऐसा मानते हैं कि इस अंचल का बस्तर नामकरण 'बांसतरी' शब्द से हुआ है। जिसका अर्थ बांस की छाया है। इस रियासत के शासक ने यह नाम दिया क्योंकि वह अपना अंधिकांश समय बांस के वृक्षों के नीचे व्यतीत किया करता था। डॉ. हीरालाल शुक्ल पुराण कालीन ध्रुव के पुत्र वत्सर के शासन क्षेत्र में आने के कारण इस क्षेत्र का बस्तर कहलाना प्रतिपादित करते हैं। हालांकि जनगणना रिपोर्ट और लोक मत में बांस के नीचे वाली बात और देवी के वस्त्र के नाम से 'बस्तर' का नामकरण होना ज्यादा उपयुक्त माना गया है।[4]

यहाँ की संस्कृति के विषय में कहा जा सकता है कि–
अरण्य की संस्कृति,
सीधा–सादा जीवन है
बस्तर की बस्तरिहा बातों में,
उनका अर्पित तन–मन है

तीज–त्यौहार :

बस्तर का दशहरा– छत्तीसगढ़ शासन की पुस्तिका यह बताती है कि दशहरा भगवान श्रीराम की लंका पर विजय और रावण वध का पर्व है किन्तु बस्तर का दशहरा माँ दंतेश्वरी देवी की पूजा–अर्चना, रथ यात्रा और स्थानीय देवी–देवताओं की उपस्थिति का एहसास है। बस्तर के दशहरा का पर्व 'काछन गादी' यानी काछन देवी का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये आश्विन मास की अमावस्या तिथि को पितृमोक्ष के दिन, एक विशेष धार्मिक आयोजन से शुरू होता है।[5] दशहरा में भव्य रथयात्रा के इस शानदार अवसर पर राजा 'माटी के पुजारी' के रूप में रथ पर बैठता है।[6]

मड़ई मेला– बस्तर में मड़ई मेले बहुत ही उत्साहपूर्वक

*सहायक प्राध्यापक – इतिहास, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर

मनाए जाते हैं। दंतेवाड़ा में लगातार दस दिनों तक चलने वाली फागुन मड़ई बहुत प्रसिद्ध है।[7]

नवाखानी– परंपरानुसार विधिपूर्वक नया अन्न ग्रहण करने के शुभारंभ को बस्तर अंचल में नवाखानी कहते हैं। इस समय ग्राम देवी–देवताओं, कुलदेवियों की पूजा की जाती है और नया धान चढ़ाकर प्रसाद स्वरूप उसे ग्रहण किया जाता है। यह प्रतिवर्ष भादो माह के शुक्ल पक्ष में मनाया जाता है। नवाखानी मनाने के बाद ही ग्रामवासी नई फसल को खाने के काम में लाते हैं।[8] इसके अलावा गोबर बोहरानी, दियारी व हरेली जैसे त्यौहार भी बस्तर में बड़े उत्साह से लोग मनाते हैं।[9]

लोकनाट्य व लोकनृत्य :

लोकनाट्य– बस्तर अंचल में हल्बी–भतरी बोलने वाले उड़िया प्रेमी आदिवासियों के बीच मनोरंजन के लिए जिस नृत्यात्मक नाट्यगीत का प्रचलन है, उड़ीसा में उसे 'ओड़ेया–नाट' जबकि बस्तर संभाग में 'भतरा नाट' कहा जाता है। भतरा नाट की भाषा, अपभ्रंश उड़िया होती है। अब तो 'भतरा–नाट' में माइक का भी उपयोग होने लगा है। नये–नये वाद्य भी उपयोग में आने लगे हैं।... भतरा नाट पहले धार्मिक आख्यानों पर ही प्रदर्शित होते रहे थे, परंतु पाइकपाल ग्राम के नाट कलाकारों ने 'तिरी–राजा' (नारी–नरेश) नामक एक नये नाट का प्रदर्शन प्रयोग प्रारंभ किया है। 'मुंदरामाँझी' नाम से एक सामाजिक नाट का भी प्रचलन हुआ है। 'भतरा नाट' खेती–पाती के मौसम में बंद रहता है।[10]

लोकनृत्य– लोक नृत्य में अद्भुत सौंदर्य होता है। लोकनृत्य भावनाओं की अभिव्यक्तियों का एक जरिया होते हैं। व्यक्ति अपनी खुशी को लोकनृत्यों के माध्यम से सहज ही व्यक्त कर सकता है। ये लोकनृत्य किसी समाज की संस्कृति व सभ्यता की झांकी सा प्रस्तुत करते दिखते हैं। बस्तर अंचल में गौर नृत्य (माड़िया युवक गौर का सींग सिर पर धारण कर नृत्य करते हैं), करसाड़ नृत्य (यह मुरिया तथा अबूझमाड़ियाओं के बीच ज्यादा लोकप्रिय है) व गेंड़ी नृत्य (यह सावन–भादो मास में खूब प्रचलित दिखता है) का आकर्षण देखते ही बनता है।[11]

शिल्प कला :

बस्तर की शिल्प कला– बस्तर में लोक कला मूर्त करने हेतु प्रमुख रुप से पाँच उपकरण उपयोग में लाये जाते हैं– पत्थर, मिट्टी, काष्ठ (लकड़ी), बाँस और धातु। सहज, सुलभ इन आवश्यक उपकरणों से अंचल के गुमनाम एवं श्रम जीवी कलाकार वर्षों से विभिन्न प्रकार के आकर्षक कला का रुप साकार करते जा रहे हैं।[12] आदिवासी बाहुल्य बस्तर, हस्तशिल्प का पर्यायवाची बन गया है। बस्तर जहाँ अपनी संस्कृति एवं प्राकृतिक सुंदरता के लिए बाह्य जगत को आकर्षित करता है, वहीं यहाँ की बेजोड़ शिल्प एवं दस्तकारी की वस्तुएँ मन में अपनी श्रेष्ठता एवं बारीकी की छाप छोड़े बिना नहीं रहती हैं।[13] देश की सांस्कृतिक राजधानी भोपाल, स्थित भारत भावन को सजाने–संवारने में भी बस्तर के हस्तशिल्पियों का विशेष महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[14] बस्तर की शिल्पकला का दर्शन करने वाला प्रत्येक मन उनसे अपने ड्राइंग रुम की शोभा बढ़ाना चाहता है।

गोदना प्रथाः

गोदना प्रथा– गोदना क्या है? इसे स्पष्ट करते हुए बस्तर के साहित्यकार लाला जगदलपुरी ने लिखा है– एक ऐसी अलंकरण प्रणाली का नाम गोदना है जिसका संबंध सीधे लोक संस्कृति से जुड़ता है। जहाँ त्वचा चित्रांकन का नाम गोदना है, वहीं त्वचा चित्र को भी गोदना कहते हैं। गोदना शब्द के कई अर्थ होते हैं चुभाना या गड़ाना, किसी कार्य के लिये बार–बार जोर देना, चुभती या लगती बात कहना, ताना मारना, नील या कोयले के पानी में सुई को डुबाकर शरीर को विविध प्रकार से चिह्नित करना और गोदने से बनी आकृति।[15]

गोदना सौन्दर्य वृद्धि के साथ–साथ सामाजिक एवं धार्मिक महत्व रखता है। कुछ प्रतीक विवाह पश्चात् सुहाग का सौभाग्य तथा प्रजनन शक्ति अर्थात् मातृत्व के लिए गुदवाने की परम्परा मिलती है। धार्मिक अनुष्ठानों में, मेलों में, तीज त्यौहारों में गोदना गुदवाने की परम्परा है।[16] बस्तर अंचल की अबूझमाड़िया दण्डामी–माड़िया, घोटुल–मुरिया, दोरला, परजा–धुरवा और गदबा जन जातियों की स्त्रियों में गोदना गुदाने की प्रथा सबसे अधिक प्रचलित है। यहाँ तक कि शरीर विकृत हो जाया करते थे। शरीर–विकृति को भी वे अंलकरण ही समझते थे । परंतु इधर पुरुषों में गोदना का चलन नहीं के बराबर है।[16]

बस्तर की मुरिया जनजाति पर कार्य करने वाले श्री नवल शुक्ल ने लिखा है – गुदना स्मृति चिन्ह और मधुर संबंध के प्रतीक में गुदवाया जाता है। गुदना धार्मिक और सामाजिक क्रिया है जिसके साथ सौन्दर्य की भावना भी जुड़ी हुई है। गुदने के संबंध में यह धारणा है कि रोग दुःख कम होते हैं, शक्ति आती है, जनजाति देव वक्र पर रक्षा करते हैं, विपत्तियाँ नहीं आती।[17] बस्तर के आदिवासियों पर व उनकी परंपराओं पर कार्य करने वाले डॉ. बेहार ने लिखा है– बस्तर का आदिवासी समाज गोदना को स्वर्ग का पासपोर्ट मानता है। गोदना रहित महिला स्वर्ग जा ही नहीं सकती यह बद्ध मूल धारणा आदिवासी समाज में व्याप्त है। गोदना रहित महिला स्वर्ग नहीं जावेगी और उसका पुनः जन्म कन्या के रुप में ही होगा और सांसारिक चक्र में फंसना होगा।[18]

सन्दर्भ :–

1. ट्रीटीज, एचीसन– सनद् एण्ड इन्गेजमेण्ट भाग–4, पृ.क्र. 228 (साभार : डॉ. भगवान सिंह वर्मा, छ0ग0 का इतिहास, पृ.क्र. 191)
2. बेहार, रामकुमार एवं श्रीवास्तव, नर्मदा प्रसाद– आदिवासी बस्तर इतिहास एवं परम्पराएँ, 1992 ई., पृ. क्र. 73
3. वर्मा, भगवान सिंह– छत्तीसगढ़ का इतिहास, (राजनीतिक

एवं सांस्कृतिक) (प्रारंभ से 1947 ई. तक) मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ.क्र. 28
4. रात्रे, तिलकराम– बस्तर नरेश भैरमदेव के शासनकाल के विवेचनात्मक अध्ययन, 1996 ई., पृ.क्र. 4–6
5. सार्वा, महेन्द्र कुमार– बस्तर रियासत में जन आंदोलन, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग., पृ.क्र. 3
6. छत्तीसगढ़ विकास का मुक्ताकाश, छ.ग. शासन, छ.ग. राज्योत्सव, 2004 ई.
7. स्माचार पत्र : हरिभूमि– बिलासपुर अंक, 01 मार्च, 2007 ई. चौपाल
8. जगदलपुरी, लाला– बस्तर : इतिहास एवं संस्कृति (म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी), 2000 ई., पृ.क्र. 3
9. साक्षात्कार– श्री मिथिलेश पाठक, दिनांक 12 अप्रैल, 2022 ई.
10. पूर्वोद्धृत क्र. 08– पृ.क्र. 222–225
11. पूर्वोद्धृत क्र. 09
12. पूर्वोद्धृत क्र. 08– पृ.क्र. 44
13. चौबे, डॉ. चन्द्रशेखर– बस्तर का हस्तशिल्प उद्योग– समस्याएँ एवं सुझाव, शोध प्रकल्प, अंक 35, संख्या–2, अप्रैल–जून, 2006 ई., पृ.क्र. 74–50
14. दोसी, किरिट– बस्तर का हस्तशिल्प, म.प्र. संदेश, 21 अप्रैल, 1983 ई. (साभार : डॉ. रामकुमार बेहार, छत्तीसगढ़ संस्कृति और विभूतियाँ), पृ.क्र. 88
15. जगदलपुरी, लाला– वन्य जीवन का सौन्दर्य गोदना विदेश में फैशन बन गया (लेख), अमृत संदेश, दैनिक रायपुर, दिनांक 25 / 06 / 1989 ई.
16. यदु, डॉ. हेमू– छत्तीसगढ़ की लोककला में पारम्परिक शृंगार गोदना, छत्तीसगढ़ की संस्कृति, अस्मिता प्रतिष्ठान, रायपुर, 2002 ई., पृ.क्र. 154
17. पूर्वोद्धृत क्र. 08– पृ.क्र. 257
18. पूर्वोद्धृत क्र. 08– पृ.क्र. 73

❐❐❐